VAJIRAM & RAVI

Institute for IAS Examination

नीति शास्त्र - 1

वर्कबुक

नितिशास्त्र -I

नैतिकता, नीतिशास्त्र, मूल्य और अभिवृति (MEVA)----------1
मूल्यों को स्थापित करने में परिवार, समाज और शैक्षिक संस्थानों की भूमिका----------8

नैतिकता, नीतिशास्त्र, मूल्य और अभिवृति (MEVA)

अवधारणा	विवरण	उदाहरण
नैतिकता (Morals)	– नैतिकता वे मूल्य हैं जो एक **व्यक्ति** धारण करता है, जो उसे व्यक्तिगत विश्वासों और विवेक के आधार पर सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं। – नैतिकता **व्यक्ति के चरित्र** का निर्धारण करती है और नैतिक दुविधाओं में उसके व्यवहार का मार्गदर्शन करती है। – **सत्यता, दयालुता और अखंडता** जैसे नैतिक सिद्धांत। – नैतिकता व्यक्तिगत मूल्यों से प्रभावित होती है और सामाजिक नैतिकता के साथ संरेखित या संघर्ष कर सकती है।	- राम द्वारा अपने पिता के वचन का सम्मान करने के लिए वनवास स्वीकार कर "**मर्यादा पुरुषोत्तम**" का पालन करना। - भारत के स्वतंत्रता संग्राम में **गांधीजी की अहिंसा।** - **अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन** नागरिकों की नैतिक जिम्मेदारी पर प्रकाश डालता है।
सामाजिक नैतिकता (Ethics)	– सामाजिक नैतिकता से तात्पर्य **समाज** द्वारा अपनाए गए सिद्धांतों और मूल्यों से है जो **सही** और **गलत** के बीच अंतर करने में मदद करते हैं। – वे अक्सर **सामाजिक मानदंडों** से उत्पन्न होते हैं और सामूहिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। – सामाजिक नैतिकता सामाजिक व्यवहार का मार्गदर्शन करती है और समाज के सदस्यों से अपेक्षित मानदंड स्थापित करके व्यवस्था बनाए रखने में सहायता करती है। – नैतिक आचरण जैसे व्यापार में **ईमानदारी**, निर्णय में **निष्पक्षता** और शासन में **सत्यनिष्ठा।** – सामाजिक नैतिकता सामाजिक मूल्यों द्वारा आकार लेती है और व्यक्तिगत नैतिकता(morals) को प्रभावित कर सकती है या उनसे प्रभावित हो सकती है।	- **युधिष्ठिर** का हानि के बावजूद सत्य पर अडिग रहना। - लाल बहादुर शास्त्री का नैतिक नेतृत्व, जिसका प्रतीक उनका नारा "**जय जवान जय किसान**" है। - टाटा समूह की **सीएसआर पहल।**
मूल्य (Values)	– मूल्य उस **महत्व या मूल्य को दर्शाते** हैं जो व्यक्ति या समाज **कुछ विश्वासों, सिद्धांतों या मानकों को देते हैं।** – वे अमूर्त हैं और सामान्य व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन आवश्यक रूप से विशिष्ट कार्यों की भविष्यवाणी नहीं करते हैं।	– भरत की राम के प्रति निष्ठा। – "**वसुधैव कुटुंबकम**" (दुनिया एक परिवार है) का मूल्य। – विवेकानंद का **निःस्वार्थता और आध्यात्मिकता** को बढ़ावा देना।

	– मूल्य सामाजिक और व्यक्तिगत नैतिक निर्णयों की नींव बनाते हैं और निर्णय लेने और व्यवहार वरीयताओं को प्रभावित करते हैं। – ईमानदारी, शांति और समानता जैसे मूल्य। – **मूल्य सामाजिक नैतिकता (Ethics-समाज के मूल्य) और व्यक्तिगत नैतिकता (Morals-व्यक्ति के मूल्य) दोनों** का आधार प्रदान करते हैं। जब इन्हें विशिष्ट वस्तुओं या स्थितियों पर लागू किया जाता है, तो ये अभिवृति को आकार देते हैं।	– **वांगारी मथाई के** पर्यावरण संरक्षण प्रयास।
अभिवृति (**Attitudes**)	– अभिवृति **विशिष्ट वस्तुओं, लोगों या स्थितियों के प्रति मूल्यों का अनुप्रयोग** है, जो सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। – यह व्यवहार का एक विशिष्ट पूर्वानुमान है और किसी व्यक्ति की एक निश्चित तरीके से कार्य करने की तत्परता को दर्शाता है। – अभिवृति यह निर्धारित करते हैं कि कोई व्यक्ति विशिष्ट परिस्थितियों में किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है, तथा उनके व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करता है। – पर्यावरण संरक्षण या लैंगिक समानता जैसे सामाजिक मुद्दों के प्रति अभिवृति – अभिवृति अंतर्निहित मूल्यों द्वारा आकार लेते हैं और नैतिकता और सामाजिक आचार दोनों से प्रभावित हो सकते हैं।	– कृष्ण के मार्गदर्शन के बाद कुरुक्षेत्र में अर्जुन का संकल्प। – स्वतंत्रता आंदोलन के लिए महिलाओं को संगठित करने में **सरोजिनी नायडू** की सकारात्मक अभिवृति – **एपीजे अब्दुल कलाम** का निरंतर सीखने और युवाओं को प्रेरित करने की अभिवृति – दबाव में एमएस धोनी का शांत रवैया, **"कैप्टन कूल"** का प्रतीक।
मान्यताएं (Beliefs)	– मान्यताएं **व्यक्तियों या समूहों द्वारा रखे गए विचार और दृष्टिकोण होते** हैं, जिनमें तथ्यात्मक और गैर-तथ्यात्मक (मिथक, लोककथाएँ) दोनों तत्व शामिल होते हैं। ये अक्सर संस्कृति की नींव बनते हैं। – इसमें सत्य और पौराणिक दोनों तत्व शामिल हो सकते हैं। – अक्सर उन्हें धारण करने वाले समूह के लिए अदृश्य होते हैं। – मान्यताएं समय के साथ विकसित या परिवर्तित हो सकती हैं।	– **कर्म में मान्यता:** सांस्कृतिक समूहों के भीतर व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करता है। – **अंधविश्वासों में मान्यता:** परंपरा के आधार पर व्यक्तिगत कार्यों का मार्गदर्शन करना।
मानक (Norms)	मानक **सामाजिक अपेक्षाएँ हैं जो व्यवहार को निर्देशित करती** हैं, और इनका पालन न करने पर अक्सर दंड या सामाजिक नियंत्रण का सामना करना पड़ता है। इन्हें अंततः कानूनों में संहिताबद्ध किया जा सकता है। - सामाजिक नियंत्रण तंत्र के रूप में कार्य करते है। - अनुपालन न करने पर दण्ड भी हो सकता है। - संहिताबद्ध होने पर कानून बनते है।	– गैर-पारंपरिक विवाह, जैसे अंतर्धार्मिक या अंतर्जातीय विवाह, को सामाजिक अस्वीकृति का सामना करना पड़ सकता है। – सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए टीकाकरण कराने का सामाजिक दबाव।
सामाजिक नैतिकता(Ethics)के निर्धारक	– सामाजिक नैतिकता विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें धर्म, संस्कृति, कानून, नेतृत्व, दर्शन, भूगोल और आर्थिक कारक शामिल हैं। ये निर्धारक सार्वभौमिक नहीं हैं और व्यापक रूप से भिन्न हो सकते हैं। – क्षेत्र, समय और संदर्भ के अनुसार भिन्न होते हैं- धार्मिक शिक्षाओं, सांस्कृतिक मूल्यों, कानूनी मानकों, दार्शनिक विचारों और आर्थिक प्रणालियों से प्रभावित होते हैं।	– **धार्मिक नैतिकता:** जैन धर्म मांसाहार को अनैतिक मानता है; इस्लाम नहीं। - **भौगोलिक प्रभाव:** भौगोलिक कारकों के कारण बंगाल के ब्राह्मण मछली खाते हैं।

नैतिकता, सामाजिक नैतिकता/नीतिशास्त्र, मूल्य और अभिवृति की प्रकृति (MEVA)	
स्थैतिक बनाम गतिशील	MEVA को अपेक्षाकृत **स्थायी माना जाता है**। – वे पूरी तरह से स्थिर या तेजी से गतिशील होने के बजाय समय के साथ धीरे-धीरे बदलते हैं। – यह क्रमिक परिवर्तन व्यक्ति की पहचान के साथ उनके गहरे जुड़ाव के कारण होता है, जिसे व्यक्ति स्थिरता बनाए रखना पसंद करते हैं। – इन लक्षणों को विकसित करने या बदलने के लिए समय, ऊर्जा और संसाधनों का एक महत्वपूर्ण निवेश आवश्यक है। – अपराध की भावना की उपस्थिति अक्सर स्थापित MEVA से विचलन के साथ होती है, जो उनके सापेक्ष स्थायित्व को मजबूत करती है।
निरपेक्ष बनाम सापेक्ष	MEVA या तो निरपेक्ष या सापेक्ष हो सकता है: – **निरपेक्ष:** सार्वभौमिक और अपरिवर्तनीय, सभी लोगों पर हर समय लागू (जैसे, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा)। – **सापेक्ष:** संदर्भ, समय, स्थान और परिस्थितियों पर निर्भर। उदाहरण: – समय के साथ, भारतीय संस्कृति में पितृसत्तात्मक मूल्यों का प्रभाव कम हुआ है। – भारत से अमेरिका जाने वाला व्यक्ति कुछ अमेरिकी मूल्यों को अपना सकता है। – यहाँ तक कि मृत्युदंड के विरोधी भी चरम मामलों में इसका समर्थन कर सकते हैं, जैसे कि भारत में निर्भया और दिशा मामला।
संस्कृति-विशिष्ट बनाम सार्वभौमिक	MEVA संस्कृति-विशिष्ट और सार्वभौमिक दोनों हो सकता है: – **सार्वभौमिक:** प्रेम, अखंडता और प्रतिबद्धता जैसे कुछ MEVA को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। – **संस्कृति-विशिष्ट:** कुछ मूल्य, जैसे भारत में पारिवारिक आज्ञाकारिता और सामूहिकता, विशिष्ट संस्कृतियों के लिए अद्वितीय हैं।
व्यक्तिपरक बनाम वस्तुनिष्ठ	MEVA व्यक्तिपरक है या वस्तुनिष्ठ, इस पर बहस लंबे समय से चली आ रही है: – **वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण (प्लेटो):** MEVA मानवीय धारणा से स्वतंत्र रूप से मौजूद है। उदाहरण के लिए, सुंदरता एक अंतर्निहित गुण है जिसे हर कोई पहचानता है। – **व्यक्तिपरक दृष्टिकोण (प्रोटागोरस):** MEVA व्यक्तिगत धारणाओं और सांस्कृतिक संदर्भों से आकार लेता है। उदाहरण के लिए, सुंदरता व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के आधार पर भिन्न होती है, जिसे "सुंदरता देखने वाले की आँखों में होती है" वाक्यांश में संक्षेपित किया गया है।

नैतिकता के आयाम	
भारतीय परिप्रेक्ष्य	
आश्रम धर्म: भारतीय दर्शन में, जीवन को चार चरणों (आश्रमों) में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक के विशिष्ट नैतिक कर्तव्य हैं: – **ब्रह्मचर्य (विद्यार्थी जीवन):** शिक्षा और आत्म-अनुशासन पर ध्यान केंद्रित करना। – **गृहस्थ (गृहस्थ):** पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करना। – **वानप्रस्थ (सन्यासी):** भौतिक जीवन से धीरे-धीरे विरक्ति, आध्यात्मिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना। – **संन्यास (त्याग):** सांसारिक बंधनों का पूर्ण त्याग, स्वयं को आध्यात्मिक ज्ञान के लिए समर्पित करना। नैतिक व्यवहार इन चरणों के अनुरूप होना चाहिए, जो व्यक्ति की आयु और जीवन के चरण के साथ विकसित होता है।	– वनवास के दौरान **राम** का धर्म का पालन गृहस्थ आश्रम के कर्तव्य को दर्शाता है। – स्वामी विवेकानंद ने अपना प्रारंभिक जीवन शिक्षा और आध्यात्मिक विकास के लिए समर्पित कर दिया, जो ब्रह्मचर्य आश्रम का प्रतीक है। – **भीष्म** का त्याग वानप्रस्थ का प्रतीक है। – **महात्मा गांधी** का जीवन संन्यास आश्रम के त्याग और सेवा के सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता था।
वर्ण धर्म: यह व्यक्ति के वर्ण (जाति) के आधार पर कर्तव्यों का निर्धारण करता है, यद्यपि यह समानता और स्वतंत्रता के आधुनिक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।	**महाभारत:** युद्ध में अर्जुन की दुविधा वर्ण धर्म और व्यक्तिगत नैतिकता के बीच संघर्ष को दर्शाती है। **डॉ. बी.आर. आंबेडकर:** वर्ण धर्म की आलोचना की, समानता और सामाजिक न्याय की वकालत की।
पश्चिमी परिप्रेक्ष्य	
मानक नैतिकता (निर्देशात्मक):यह "हमें क्या करना चाहिए" के प्रश्न का समाधान करता है और नैतिक आचरण के मानदंड प्रदान करता है। इसे निम्न में विभाजित किया गया है: – **उद्देश्यवादी नैतिकता(Teleological Ethics) (परिणामवादी):** यह कार्यों का मूल्यांकन उनके परिणामों के आधार पर करती है। उदाहरण के लिए, उपयोगितावाद अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम भलाई चाहता है। – **कर्तव्यवादी नैतिकता (Deontological ethics):** यह परिणामों के बजाय स्वयं कार्य की नैतिकता पर केंद्रित है। उदाहरण के लिए, कांट(Kant) का निरूपक आदेशात्मक सिद्धांत परिणामों की परवाह किए बिना कर्तव्य और सिद्धांतों पर ज़ोर देता है।	– **मार्टिन लूथर किंग जूनियर की** नागरिक अधिकारों के लिए लड़ाई न्याय के सिद्धांत, एक मानक नैतिक मानक पर आधारित थी। – **भगवान राम द्वारा सीता को निर्वासित** करने का निर्णय सामाजिक परिणामों पर आधारित था, जो उद्देश्यवादी नैतिकता को दर्शाता था। – **इम्मैनुएल कांट** स्पष्ट आदेशात्मकता(Categorial Imperative) की वकालत की, जहां कार्यों का मूल्यांकन उनके कर्तव्य पालन के आधार पर किया जाता है। – स्पष्ट अनिवार्यता एक नैतिक कानून है जो कहता है कि कोई कार्य नैतिक रूप से अच्छा है यदि इसे बिना किसी विरोधाभास के सार्वभौमिक रूप से लागू किया जा सकता है।
– **वर्णनात्मक/तुलनात्मक नैतिकता (Comparative Ethics):** यह विभिन्न संस्कृतियों और ऐतिहासिक अवधियों में नैतिक विश्वासों और प्रथाओं का अध्ययन करता है, बिना यह बताए कि क्या सही है और क्या गलत।	– यूक्रेन-रूस संघर्ष से पता चलता है कि पश्चिमी देश मानवाधिकारों के आधार पर प्रतिबंध लगा रहे हैं, जबकि चीन और भारत जैसे गैर-पश्चिमी देश तटस्थता बनाए हुए हैं, जो विविध सांस्कृतिक और भू-राजनीतिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

– **मेटा-एथिक्स (Meta ethics):** यह बिना कोई निर्णय लिए, नैतिक सिद्धांतों की उत्पत्ति और अर्थों की पड़ताल करता है। उदाहरण के लिए, ईमानदारी की प्रकृति और एक ईमानदार व्यक्ति होने का क्या अर्थ है, इसकी जाँच करता है।	– **अखंडता:** एक मेटा-नैतिक विश्लेषण एक ईमानदार व्यक्ति होने की प्रकृति और निहितार्थ पर सवाल उठाएगा। – **प्लेटो** ने **"अच्छाई"** के विचार को सर्वोच्च नैतिक सिद्धांत के रूप में चर्चा की, जो अन्य नैतिक अवधारणाओं का आधार है।
– **सदाचार नैतिकता(Virtue Ethics):** यह व्यक्ति के विशिष्ट कार्यों के बजाय उसके चरित्र पर केंद्रित होता है। एक सद्गुणी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से नैतिक चुनाव करता है। यह दृष्टिकोण न्याय और साहस जैसे गुणों पर ज़ोर देता है।	– **अरस्तू (Aristotle)**चार गुणों की वकालत की गई है: वे हैं **विवेक, न्याय, धैर्य और संयम।**
– **व्यावहारिक नैतिकता (Applied Ethics):** यह वास्तविक जीवन के नैतिक मुद्दों, जैसे इच्छामृत्यु, मृत्युदंड और मीडिया नैतिकता, पर केंद्रित है। यह समकालीन दुविधाओं पर नैतिक सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास करती है।	– **व्हिसिलब्लोअर (Whistleblower)मामला:**NSA द्वारा बड़े पैमाने पर निगरानी के बारे में एडवर्ड स्नोडेन के खुलासे से गोपनीयता बनाम राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में व्यावहारिक नैतिकता में प्रश्न उठते हैं।

नैतिकता और मानवीय संपर्क	
1. ऐसा माना जाता है कि मानवीय कार्यों में नैतिकता का पालन किसी संगठन/व्यवस्था के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करता है। यदि ऐसा है, तो नैतिकता मानव जीवन में क्या बढ़ावा देना चाहती है? नैतिक मूल्य उसके दैनिक कार्यों में आने वाले संघर्षों के समाधान में कैसे सहायक होते हैं?	2022
2. वर्तमान संदर्भ में इस उद्धरण का आपके लिए क्या अर्थ है: "जब असत्य से निष्कलंक सामान्य भलाई उत्पन्न होती है, तो वह सत्य का स्थान ले लेता है।" - तिरुक्कुरल।	2018
3. कर्मों की नैतिकता के संबंध में, एक दृष्टिकोण यह है कि साधन सर्वोपरि हैं और दूसरा दृष्टिकोण यह है कि साध्य साधनों को उचित ठहराते हैं। आपके अनुसार कौन सा दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त है? अपने उत्तर का औचित्य बताइए।	2018
4. आधुनिक समय में नैतिक मूल्यों का संकट अच्छे जीवन की संकीर्ण धारणा से जुड़ा है। चर्चा कीजिए।	2017
5. साझा और व्यापक रूप से स्थापित नैतिक मूल्यों और दायित्वों के बिना, न तो कानून, न ही लोकतांत्रिक सरकार, और न ही बाज़ार अर्थव्यवस्था ठीक से काम कर पाएगी। इस कथन से आप क्या समझते हैं? समकालीन समय में उदाहरण सहित समझाइए।	2017
6. व्याख्या कीजिए कि नैतिकता सामाजिक और मानवीय कल्याण में किस प्रकार योगदान देती है।	2016
7. कानून और नैतिकता को मानव आचरण को नियंत्रित करने के दो उपकरण माना जाता है ताकि इसे सभ्य सामाजिक अस्तित्व के लिए अनुकूल बनाया जा सके। (a) चर्चा करें कि वे इस उद्देश्य को कैसे प्राप्त करते हैं। (b) उदाहरण देते हुए, दिखाएं कि दोनों अपने दृष्टिकोण में कैसे भिन्न हैं।	2016
8. 'पर्यावरणीय नैतिकता' का क्या अर्थ है? इसका अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है? पर्यावरणीय नैतिकता के दृष्टिकोण से किसी एक पर्यावरणीय मुद्दे पर चर्चा कीजिए।	2015
9. निम्नलिखित के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए: a) कानून और नैतिकता; b) नैतिक प्रबंधन और नैतिकता का प्रबंधन; c) भेदभाव और अधिमान्य व्यवहार; d) व्यक्तिगत नैतिकता और व्यावसायिक नैतिकता	2015
10. मनुष्यों को सदैव स्वयं में 'साध्य' ही समझना चाहिए, कभी भी मात्र साधन नहीं। इस कथन का अर्थ और महत्त्व स्पष्ट कीजिए, तथा आधुनिक तकनीकी-आर्थिक समाज में इसके निहितार्थ बताइए।	2014

11. आप 'मूल्यों' और 'नैतिकता' से क्या समझते हैं? पेशेवर रूप से सक्षम होने के साथ-साथ नैतिक होना किस प्रकार महत्वपूर्ण है?	2013
12. कुछ लोगों का मानना है कि मूल्य समय और परिस्थिति के साथ बदलते रहते हैं, जबकि कुछ अन्य लोगों का दृढ़ विश्वास है कि कुछ सार्वभौमिक और शाश्वत मानवीय मूल्य हैं। इस संबंध में अपनी धारणा उचित औचित्य के साथ प्रस्तुत कीजिए।	2013

मूल्यों को स्थापित करने में परिवार, समाज और शैक्षिक संस्थानों की भूमिका

मूल्य निर्माण की अवधारणा

मूल्य उन सिद्धांतों या व्यवहार मानकों को संदर्भित करते हैं जो समाज में व्यक्तियों के व्यवहार और अंतःक्रिया को प्रभावित करते हैं। परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों सहित विभिन्न स्रोत उन्हें आकार देते हैं। मूल्य व्यक्तिगत गुणों और पर्यावरणीय कारकों के माध्यम से विकसित होते हैं, और हमारे आसपास के लोगों के निरंतर प्रभाव के साथ विकसित होते हैं। इन मूल्यों को स्थापित करने और पोषित करने के लिए सामाजिक अंतःक्रियाएँ महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य विचार:

"स्व-निर्मित व्यक्ति जैसी कोई चीज़ नहीं होती। हम हज़ारों लोगों से मिलकर बने होते हैं।" यह वाक्यांश मूल्यों को आकार देने में सामाजिक अंतःक्रियाओं की भूमिका पर जोर देता है।

"एक आदमी आमतौर पर अपने सबसे करीबी पांच लोगों के सबसे करीब होता है।" इससे यह पता चलता है कि किस प्रकार घनिष्ठ संबंध किसी व्यक्ति की मूल्य प्रणाली को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

मूल्य-प्रशिक्षण में परिवार की भूमिका

परिवार समाजीकरण का पहला अनौपचारिक माध्यम है जहाँ मूल मूल्यों का निर्माण होता है, अक्सर भावनात्मक लगाव के माध्यम से। परिवार मूल्य निर्माण को तीन मुख्य तरीकों से प्रभावित करता है:

- **बच्चों के पालन-पोषण के तरीके:** माता-पिता अपने बच्चों को किस प्रकार अनुशासित करते हैं, सिखाते हैं और उनके साथ कैसे बातचीत करते हैं।
- **अवलोकन सीखना:** बच्चे अपने माता-पिता और भाई-बहनों के व्यवहार को देखकर मूल्य सीखते हैं।
- **रोल मॉडलिंग:** माता-पिता अक्सर पहले रोल मॉडल बन जाते हैं, और उनका व्यवहार सीधे बच्चे की मूल्य प्रणाली को प्रभावित करता है।

उदाहरण:

- **महात्मा गांधी** ने अहिंसा और विरोध के रूप में उपवास जैसे मूल्यों को स्थापित करने का श्रेय अपनी मां को दिया।
- **सत्य नडेला,** माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ, अपनी सहानुभूति और नवोन्मेषी मानसिकता को आकार देने में अपने परिवार के प्रभाव को स्वीकार करते हैं।
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान ने भारतीय परिवारों में बालिकाओं के प्रति दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, तथा लैंगिक समानता के मूल्यों को बढ़ावा दिया है।
- **केरल का सकारात्मक पालन-पोषण कार्यक्रम** लोकतांत्रिक बाल-पालन प्रथाओं को बढ़ावा देता है और करुणा और पारस्परिक सम्मान जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करता है।

मूल्य निर्माण में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

शिक्षण संस्थान व्यक्ति के बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और आचारिक आयामों का व्यवस्थित रूप से विकास करते है। स्कूल और कॉलेज औपचारिक शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन वे मूल्यों को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो अक्सर पाठ्यक्रम में अंतर्निहित होते हैं। शिक्षक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं, और शिक्षा प्रणाली दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देते है।

उदाहरण:

- **गोपाल कृष्ण गोखले** ने महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्य के मूल्यों को प्रभावित किया।
- **जापान की शिक्षा प्रणाली** विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के प्रथम चार वर्षों के दौरान सम्मान और अनुशासन जैसे मूल्यों को सिखाने पर केंद्रित है।
- **केरल की कक्षा 7 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक** में विविध धार्मिक संबद्धता वाले परिवार को चित्रित करके धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक विकल्प की स्वतंत्रता पर जोर दिया गया है।
- **दिल्ली की खुशी की कक्षाएं** स्कूलों में भावनात्मक कल्याण और सजगता को बढ़ावा देती है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-जागरूकता से संबंधित मूल्यों को आकार मिल पाए।

व्यावहारिक नैतिकता

व्यावहारिक नैतिकता वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों में नैतिक सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को संदर्भित करती है। यह पर्यावरणीय नैतिकता, जैव-चिकित्सा नैतिकता, मीडिया नैतिकता, सैन्य नैतिकता और कॉर्पोरेट नैतिकता जैसे विभिन्न क्षेत्रों को कवर करती है।

उदाहरण:

- **पर्यावरणीय नैतिकता:** उत्तराखंड में चिपको आंदोलन के दौरान ग्रामीणों ने वनों की कटाई रोकने के लिए पेड़ों को गले लगाया और पर्यावरण संरक्षण का प्रदर्शन किया।
- **बायोमेडिकल नैतिकता:** भारत में वाणिज्यिक सरोगेसी का विनियमन, चिकित्सा प्रक्रियाओं से जुड़ी नैतिक दुविधाओं का एक उदाहरण है।
- **मीडिया नैतिकता:** सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद मीडिया ट्रायल ने गोपनीयता और नैतिक पत्रकारिता को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं।
- **सैन्य नैतिकता:** 2016 में भारत द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक ने सैन्य बल के नैतिक उपयोग पर बहस छेड़ दी थी।
- **कॉर्पोरेट नैतिकता:** नीरव मोदी घोटाले ने कॉर्पोरेट प्रथाओं में नैतिक शासन की आवश्यकता को उजागर किया।

कोहलबर्ग के नैतिक विकास के चरण (Kohlberg's Stages of Moral Development)

कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धांत तीन स्तरों की रूपरेखा दी गई है, जिनमें से प्रत्येक में दो चरण हैं:

- **पूर्व-परंपरागत स्तर:** आज्ञाकारिता और दंड या स्वार्थ पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **पारंपरिक स्तर:** इसमें पारस्परिक समझौते और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना शामिल है।
- **उत्तर-परंपरागत स्तर:** सामाजिक अनुबंध और सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों से संबंधित।

उदाहरण:

- भारत में **सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम** उत्तर-परंपरागत स्तर पर सामाजिक अनुबंध तर्क को प्रतिबिंबित करता है।

- **गांधीजी का सत्याग्रह** सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है, नैतिकता के अनुरूप कार्य करता है, भले ही यह कानून के साथ संघर्ष करता हो।

पर्यावरणीय नैतिकता

पर्यावरणीय नैतिकता मानव और प्रकृति के बीच नैतिक संबंधों पर केंद्रित है और पर्यावरण के प्रति सद्भाव और सम्मान को बढ़ावा देती है। यह प्राकृतिक दुनिया पर आधुनिक सभ्यता के प्रभाव को चुनौती देती है और ज़िम्मेदार प्रबंधन की आवश्यकता पर ज़ोर देती है।

उदाहरण:

- **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने कहा, "सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल जानकारी ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के साथ सामंजस्य में लाती है।"
- **चिपको आंदोलन** पर्यावरण के प्रति नैतिक जिम्मेदारी का एक उदाहरण है।

पर्यावरणीय नैतिकता के समक्ष चुनौतियों में **अमेज़न में वनों की कटाई** शामिल है, जिसके कारण जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का नुकसान होता है, तथा **भोपाल गैस त्रासदी** जैसी घटनाएं पर्यावरण के प्रति लापरवाही के दुष्परिणामों को दर्शाती हैं।

स्वतंत्रतावादी और पारिस्थितिक दृष्टिकोण (Libertarian and Ecological Views)

- **स्वतंत्रतावादी दृष्टिकोण** प्रकृति के समान अधिकारों पर ज़ोर देता है और आर्थिक लाभ से परे उसके आंतरिक मूल्य की वकालत करता है। उदाहरण के लिए, भारत में गंगा जैसी नदियों को कानूनी व्यक्तित्व का दर्जा दिया गया है।
- **पारिस्थितिक दृष्टिकोण** पृथ्वी की प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालता है और सुझाव देता है कि इन प्रक्रियाओं को बाधित करने वाली मानवीय गतिविधियों पर नैतिक विचार करना आवश्यक है। **ग्रेटा थुनबर्ग की सक्रियता** जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई पर ज़ोर देती है।

संरक्षण नैतिकता (Conservation Ethics)

संरक्षण नैतिकता भावी पीढ़ियों के लिए स्थायित्व सुनिश्चित करने हेतु संसाधनों के ज़िम्मेदाराना उपयोग की वकालत करती है। **भारत में प्रोजेक्ट टाइगर** जैसे संरक्षण प्रयास, लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा में संरक्षण की भूमिका को दर्शाते हैं।

पर्यावरणीय क्षरण बनाम आर्थिक विकास

उपयोगितावादी दृष्टिकोण (Utilitarian approach) अक्सर आर्थिक विकास के लिए पर्यावरणीय क्षरण को उचित ठहराता है, अगर इससे समग्र कल्याण अधिकतम हो। हालाँकि, यह दृष्टिकोण अन्याय का कारण बन सकता है, खासकर हाशिए पर पड़े समुदायों और आने वाली पीढ़ियों के लिए। **नर्मदा बचाओ आंदोलन** के विरोध प्रदर्शन बांध निर्माण के कारण होने वाले विस्थापन के प्रतिरोध का उदाहरण हैं। **पेरिस समझौता** आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

मीडिया नैतिकता

मीडिया नैतिकता पत्रकारिता की प्रथाओं और सिद्धांतों को नियंत्रित करें, सटीकता, निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित करें। नैतिक पत्रकारिता लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह नागरिकों को सूचित करती है और उन्हें विश्वसनीय जानकारी के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

उदाहरण:

- **वाटरगेट कांड** इस बात का उदाहरण है कि खोजी पत्रकारिता किस प्रकार लोकतांत्रिक मूल्यों को कायम रख सकती है।
- भारत में, **2जी घोटाले** को उजागर करने में मीडिया की भूमिका ने भ्रष्टाचार को उजागर करने में नैतिक पत्रकारिता की शक्ति को प्रदर्शित किया।

चुनौतियों में **सनसनीखेज प्रचार, निगमीकरण और राजनीतिकरण शामिल हैं,** जो पत्रकारिता की अखंडता से समझौता करते हैं। **सुशांत सिंह राजपूत मामले** में देखा गया पीत पत्रकारिता (Yellow Journalism) मीडिया में विश्वास को कम करता है।

टीआरपी और मीडिया नैतिकता

टीआरपी-संचालित पत्रकारिता सच्चाई से ज़्यादा दर्शकों की संख्या को प्राथमिकता देता है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग होती है। भारत में **2020 का टीआरपी घोटाला** इस बात का उदाहरण है कि दर्शकों की संख्या में हेरफेर कैसे जनता की धारणा को बिगाड़ सकता है और पत्रकारिता की अखंडता को नुकसान पहुँचा सकता है।

निजता का हनन और अन्य नैतिक मुद्दे

अन्य चुनौतियों में शामिल हैं:

- **गोपनीयता पर आक्रमण,** जैसा कि **कैम्ब्रिज एनालिटिका** घोटाले में देखा गया, जहां व्यक्तिगत डेटा का उपयोग बिना सहमति के किया गया था।
- **स्पैमिंग:** अवांछित संदेश जो लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म पर उपयोगकर्ता के अनुभव को बाधित करते हैं।
- **सार्वजनिक रूप से आलोचना (public bashing)** और **अनुचित गुमनामी (improper anonymity),** जो अक्सर ऑनलाइन शर्मिंदगी या अमेज़न जैसे प्लेटफार्मों पर नकली समीक्षाओं में देखी जाती है।

कॉर्पोरेट नैतिकता

कॉर्पोरेट गवर्नेंस या कॉर्पोरेट से संबंधित शासन प्रणाली का उद्देश्य व्यवसाय में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करना तथा सतत विकास के लिए नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देना है।

उदाहरण:

- भारत में **सत्यम घोटाले** से बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी का पता चला और कॉर्पोरेट प्रशासन में सुधारों को बढ़ावा मिला।
- **टाटा समूह** शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामुदायिक विकास पर केंद्रित पहलों के साथ **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)** में एक उदाहरण स्थापित करता है।

ट्रिपल बॉटम लाइन (टीबीएल) ढांचा व्यवसायों को लोगों, ग्रह और मुनाफे पर उनके प्रभाव को मापने के लिए प्रोत्साहित करता है। **यूनिलीवर की सतत जीवन योजना** सामाजिक और पर्यावरणीय ज़िम्मेदारियों को मुनाफे के साथ संतुलित करती है।

जैव प्रौद्योगिकी नैतिकता

जैव प्रौद्योगिकी जटिल नैतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है जैसे:

- **क्लोनिंग:** क्लोनिंग के नैतिक निहितार्थों पर बहस, विशेष रूप से **डॉली भेड़** के निर्माण के बाद।
- **क्लिनिकल परीक्षण: नाइजीरिया में फाइजर के परीक्षणों** ने सूचित सहमति और नैतिक पारदर्शिता के बारे में चिंताएं पैदा कीं।

- **जीन संपादन: CRISPR प्रौद्योगिकी** के उपयोग ने "डिजाइनर शिशुओं" और आनुवंशिक संशोधन की सीमाओं पर बहस छेड़ दी है।
- **पशु अधिकार:** आनुवंशिक रूप से संशोधित पशुओं के साथ नैतिक व्यवहार, अनुसंधान में पशु कल्याण पर चिंता उत्पन्न करता है।

तकनीकी और सामाजिक प्रगति से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए समाज, मीडिया, कॉर्पोरेट प्रशासन और जैव प्रौद्योगिकी में नैतिक मानकों को गतिशील रूप से विकसित किया जाना चाहिए। पारिवारिक मूल्यों से लेकर कॉर्पोरेट नैतिकता तक, प्रत्येक आयाम एक नैतिक और सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मूल्यों को विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका	
1. ऑनलाइन पद्धति का उपयोग दैनिक बैठकों, प्रशासन में संस्थागत अनुमोदनों और शिक्षा क्षेत्र में शिक्षण-अधिगम के लिए किया जा रहा है, यहाँ तक कि स्वास्थ्य क्षेत्र में टेलीमेडिसिन भी सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से लोकप्रिय हो रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि लाभार्थियों और समग्र व्यवस्था, दोनों के लिए इसके फायदे और नुकसान हैं। ऑनलाइन पद्धतियों के उपयोग से जुड़े नैतिक मुद्दों का वर्णन और चर्चा कीजिए, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्ग के लिए।	2022
2. "शिक्षा कोई ज़बरदस्ती या कोर्ट का आदेश नहीं है, यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक प्रभावी और व्यापक साधन है।" उपरोक्त कथन के आलोक में नई शिक्षा नीति, 2020 (एनईपी, 2020) का परीक्षण कीजिए।	2020
3. 'घृणा व्यक्ति की बुद्धि और विवेक को नष्ट कर देती है और राष्ट्र की भावना को विषाक्त कर सकती है।' क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत हैं? अपने उत्तर का औचित्य सिद्ध कीजिए।	2020
4. वर्तमान इंटरनेट विस्तार ने सांस्कृतिक मूल्यों का एक अलग समूह स्थापित किया है जो पारंपरिक मूल्यों के विपरीत है। चर्चा कीजिए।	2020
5. जीवन, कार्य, अन्य लोगों और समाज के प्रति हमारी अभिवृति आमतौर पर उस परिवार और सामाजिक परिवेश द्वारा अनजाने में ही आकार लेती हैं जिसमें हम बड़े होते हैं। इनमें से कुछ अनजाने में अर्जित अभिवृति और मूल्य आधुनिक लोकतांत्रिक और समतावादी समाज के नागरिकों में अक्सर अवांछनीय होते हैं। (क) आज के शिक्षित भारतीयों में प्रचलित ऐसे अवांछनीय मूल्यों पर चर्चा कीजिए। (ख) ऐसे अवांछनीय अभिव्यक्तियों को कैसे बदला जा सकता है और इच्छुक और कार्यरत सिविल सेवकों में सामाजिक-नैतिक मूल्यों का विकास कैसे किया जा सकता है?	2016
6. स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में सामाजिक प्रभाव और अनुनय किस प्रकार योगदान दे सकता है?	2016
7. सामाजिक मूल्य आर्थिक मूल्यों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। किसी राष्ट्र के समावेशी विकास के संदर्भ में उदाहरणों सहित उपरोक्त कथन पर चर्चा कीजिए।	2015
8. वर्तमान समाज व्यापक रूप से अविश्वास की समस्या से ग्रस्त है। इस स्थिति के व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण पर क्या प्रभाव पड़ेंगे? आप व्यक्तिगत स्तर पर खुद को विश्वसनीय बनाने के लिए क्या कर सकते हैं?	2014
9. सामाजिक समस्याओं के प्रति व्यक्ति की अभिवृति के निर्माण को कौन से कारक प्रभावित करते हैं? हमारे समाज में, कई सामाजिक समस्याओं के बारे में विपरीत अभिवृति प्रचलित हैं। आप हमारे समाज में जाति व्यवस्था के बारे में कौन से विपरीत अभिवृति देखते हैं? आप इन विपरीत अभिवृति के अस्तित्व की व्याख्या कैसे करते हैं?	2014
10. हम देश में महिलाओं के विरुद्ध यौन हिंसा की बढ़ती घटनाओं को देख रहे हैं। इसके विरुद्ध मौजूदा कानूनी प्रावधानों के बावजूद, ऐसी घटनाओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। इस समस्या से निपटने के लिए कुछ नवीन उपाय सुझाएँ।	2014